

Handwritten text in a cursive script, likely a historical form or ledger. The text is organized into columns and rows, with some entries underlined. The script is dense and difficult to decipher.

Handwritten text in a cursive script, likely a historical form or ledger. The text is organized into columns and rows, with some entries underlined. The script is dense and difficult to decipher.

Handwritten text in a cursive script, likely a historical form or ledger. The text is organized into columns and rows, with some entries underlined. The script is dense and difficult to decipher.

Handwritten text in a cursive script, likely a historical form or ledger. The text is organized into columns and rows, with some entries underlined. The script is dense and difficult to decipher.

नागप
मन्त्र

नागप
मन्त्र

नागप
मन्त्र

ॐ श्री हूँ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 स्वाहा ॥ नागपूजा मन्त्र ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 वध ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 यम ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नागपूजा मन्त्र ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्रुतिप्रथमं यथाय ॥ ॥ धनत्रिंशत् ॥ गुणमलुन यथाय
 यथा ॥ सिद्धता ॥ गुणमलुन विस्मृतं ॥ समाधिः ॥ कुमाधिवास
 निनाजना ॥ यथाय ॥ ॥ धनत्रिंशत् ॥ वननद्वय ॥ यमद्वय
 नवनागद्वय ॥ स्वानद्वय ॥ ॥ धनत्रिंशत् ॥ धन ॥ निनाजना
 लाहानिबद्धा ॥ यथाय ॥ सिद्धता ॥ गुणमलुन ॥ स्वान ॥ दक्षिण

॥ यथाय ॥ अर्थयाय ॥ दद ॥ ताय ॥ अर्थयाय ॥ इति ॥
 धनदाता ॥ यथाय ॥ धनद्वय ॥ धनद्वय ॥ धनद्वय ॥
 तदा ॥ यथाय ॥ धनद्वय ॥ धनद्वय ॥ धनद्वय ॥
 धनद्वय ॥ धनद्वय ॥ धनद्वय ॥ धनद्वय ॥
 धनद्वय ॥ धनद्वय ॥ धनद्वय ॥ धनद्वय ॥

धूय निनाजं न॥ गानवा मतरु॥ यूजामडा गथं॥ यूजा
सा॥ धनकसिवाकू॥ अक्रुणवात्र॥ आवाहानय॥ मरु
अक्रुणनरुगे॥ धननि॥ अर्घयाय॥ दिगविदिगउथं॥
पूजामरु॥ पूष्यन्यास॥ वनियूजा॥ कदाचदे वनिसद्वाय॥
धन॥ कसि॥ साधन॥ दा॥ यवामृत॥ यश्चरु॥ धनंज

जनरुमस॥ यश्चविहिदकं गमक॥ मवता॥ मूमात्र॥ ज
लरुम॥ कायनास॥ अर्घयाय॥ इर्वाकू॥ अक्रुण॥ नाय
धनितयाज॥ अर्घ॥ हितिरुनसा॥ स्नान॥ वृक्षप्रता॥ सं
क्रफ॥ पतिष्ठा॥ लावना॥ धूय॥ निनाजं न॥ लाहानिचक्र
॥ लावना॥ स्नानयाय॥ यश्चरु॥ यश्चरु॥ चत॥ सिंध

ॐ नमः श्री वज्रसत्त्वाय ॥ श्री धोले नमः पुनः कृत्वा ॥ ॥
 जी समाधिः कुम्भाधिवासनश्चनलिः जत्र घवगुल्लोपि
 त्वायनं शारुनयनः वायः दिगविदिगः महावकुंशुप
 नंयंगय ॥ ॥ धनरावना ॥ अटिति शूचतानं तत्र कुंज
 ४ वक्रनिश्चनं लावना समायनं वेनावना ४ यत्रिभभन

मागधुजाविधि ॥

लं ३ २ दक्षिण कनन खड्गधारी ५ २ प्रकुं ५
 वज्रवतूलस्तुटिकमयः सर्वो गभीतं मनूष्यास्यं सफदि
 हलविदधितं द्विरुडुं वासुकनूलमगया सधारी तिली
 तं वक्रं लां समायनं सति नं सवृक्ष वृत्रधं न जात न धं ४
 सय्याकारं समय सती हिलाय ॥ तस्मिंस्त्रु द्विजवसिष्ठ
 मायन हलान सत्त्वय्यादि दान वृन ४ सनं विहाया ॥

ल ३

२ सनन वनेद कामन धूरय पुमवता ५

[illegible]

पञ्चाग्न्यं नारायणं श्रुतिं मथ्यते ॥ यत्तु न नक्तं कवेः
 श्रुतिं कमनाङ्गं मूर्धनं हि ज्ञातुं न पुरुं सयं कृत्वा ॥ ७ ॥ कमयं
 द्विहं गं कृतां कृत्वा नारायणं ॥ ८ ॥ गं काल उद्यति मन्य
 मर्दिं समयसत्तत्तमं न सत्तत्तं ॥ ९ ॥ अर्थादि द्यौर्मं नार्थां गु
 तवलि न विन्ययत् ॥ १० ॥ यत्तु न नक्तं कवेः ॥ ११ ॥ पृदि यज्ञा ॥ १२ ॥
 सिद्धाय ॥ १३ ॥

ॐ ॥ ४ ॥ अ० न० का० य० ई० स्वाहा ॥ ॥ य० ज्ञा० म० नु ॥ ॐ ॥ अ० न० क० म० हा० ना० ग० धि
य० त० य० ॐ ॥ हं ॥ ज० म्बु० दि० ये० य० च० न० नी० ज० त० य० त० २ ॥ व० म्बा० य० य० २ ॥ ई० नं० ई० स्वाहा
॥ यं० लां० घं० मु० ॥ ॥ य० त्रि० ॥ ७ ॥ द० जि० ह० ॥ ॥ य० म्बु० ली० दि० क० म०
यं० यी० व० त्स० ना० ज० नं० भी० र्म० स० क० रु० ला० कू० द० न्द्र० म० ना० न० र्म० ति० रं० दि० वु
ज० क० म० र्म० कू० गां० ज० लि० नं० ना० रु० न० ध० उ० ज० गा० को० नं० उ० य० नि० म० न० य०

पलकिसर

समयसखं तत्समयहृत् अर्घ्यादिकं कृत्वा तमेव त्रिभुवि गय
तु ॥ ॥ ध० य० न० किं० ति० वा ॥ य० म्बा० दि० य० ज्ञा ॥ ॐ ॥ प० म्बा० य० ई० न० ई० स्वा
हा ॥ य० ज्ञा० म० नु ॥ ॐ ॥ अ० ४ ॥ य० म्बा० य० ना० ग० धि० य० त० य० ॐ ॥ हं ॥ कू० य० ज०
न० य० त० य० २ ॥ ज० म्बु० दि० य० व० म्बा० य० य० २ ॥ ई० न० ई० स्वाहा ॥ यं० लां० घं० मु०
॥ २ ॥ ॥ य० म्बु० म० त० कू० ता० म्बु० म० यं० न० न्दा० व० ह्री० ह० क० मि

नं सयकृत् ॐ कूं मूं नूं कूं द्वि उं ॐ ॐ कूं मूं नूं कूं ता ॐ लि नं
 ना रु न ध ४ स प्या का नं उ य नि म नूं नूं यं स म य स त्वं वि रा च ॥
 त त्स मं ह्म न स त्वं ॐ र्घा दि कं कृ त्वा त न्ने ४ व त्रि नं वि रु य त् ॥
 ॥ धू य ॥ र्हे ह्म ॥ सा न्त्र ॥ व र्घा दि क्ता ॥ ॐ ॐ ४ त क्क का ये
 ॐ स्वा हा ॥ प ज्ञा म न्द ॥ ॐ त क्क क म ह्ना ना ग प्रि य त य न्द्र ह्म
 न कि २

५२

प ज्ञ ल य न य २ ज म्ब दि य व मा य य २ ॐ न ॐ स्वा हा ॥ यं लां र्घं
 ॥ ३ ॥ ॥ उ रु त्वा ॥ वा यु कि स य क र्म न्द्र म यं वि गू न मं
 द्वि न मि नं रु नि ता र्क द्वि उं ॐ कूं मूं नूं कूं ता ॐ लि नं ना रु न ध ४
 स प्या का नं उ य नि म नूं नूं यं स म य स त्वं त त्स मं ह्म न स त्वं ॐ र्घा दि
 कं य न स त्वं कृ त्वा त न्ने व लि न वि रु य त् ॥ ॥ धू य ॥ र्हे ह्म ॥
 वा य १

वाक् ॥ पृथ्वादिपूजा ॥ ॐ आ ४ वायु किमहं स्वाहा ॥ पूजा मन्त्र ॥ ॐ
 आ ४ वायु किमहं नागमधियतय नृहं कूयजलपूरय २ जम्बूदिव
 वप्रायय २ नृहं स्वाहा ॥ ४ ॥ आ ४ ॥ ॥ सर्वघानुमि
 भक्तमयं स्वस्तिकाक्षभीर्षसकरुणायित द्विष्टुते कम्पस्व क
 ताञ्जलिर्न नाहं नमः ४ यन्नमका नं उग्र नम नृप्यं समयसर्व

लपकमं

तत्समयं लपनसर्वज्यादियनसन कृता तनु त्रिविंशितयन
 ॥ वयं वा ने ॥ मूवकी कूम ॥ पृथ्वादिपूजा ॥ ॐ आ ४ सर्वघा
 नाय २ स्वाहा ॥ पूजा मन्त्र ॥ ॐ आ ४ मन्त्रघा नाय मूहानागमधि
 पाय नृहं जम्बूदियं जनयनय नृमायय २ नृहं स्वाहा ॥ यं
 लां र्शं मुहा ५ ॥ ॥ नमः ॥ केकाटक कांममयः

क. ४

[illegible]

पतय यना निजलमावाहय २०० रुजम्बुदिय कूपजलवचाः
यय २०० नै २०० लाहा ॥ य. सा. घ. मु ॥ ६ ॥ ॥ वायव ॥ ॥
कनिक लाहमय सफरुल्ल पितात्रकन त्रिगवल् २०० रु
कनाला द्विगकल्ल द्विगुजकमख कताज २०० नाहरेधपे ४
त्रगा उयनि मनूष्य समयसत्त गत्समं हानसत्त अर्थाः

कसहा

दिक्कत्वा गते व विविहयत ॥ धूपं यें नै ॥ यवादि ॥ यथा
विप्रा ॥ उं आ ४ क विनाय ई साहा ॥ यज्ञा मनु ॥ उं आ ४ क विना
नागुधिपनय ॥ ॐ हं क यज्ञ स पनय जम्बुद्विप वषा यय २ ई
नै ई साहा ॥ ॥ ॥ ॥ ॐ मा नै महायै नै न्यामय नी सा
त्यनदिदमि नै सफरुमा क श्रु क व लू द्वि उ अ क मं र्व क ना ३

२दि५

पृष्ठ २ य

अलि नारु न ४ ४ उगम उवात्र मनश्च समय सत्त गता मरु
न सत्त यथा दिक्कत्वा गते व विविहयत ॥ धूपं यें नै कं
॥ ययेये ॥ यथा विप्रा ॥ उं आ ४ महा यज्ञा य ई साहा ॥ यज्ञा
मनु ॥ उं आ ४ महा यज्ञा य महा य नागुधिपनय ॥ ॐ हं क यः
उगम पनय जम्बुद्विप वषा यय २ ई नै ई साहा ॥ यं ता र्व मु

३

॥ ८ ॥ ॥ तत्ता वनिनायय वामकर्नं ह्यमकात्रन दत्रि
न वनदाहिनययसार्थ ॥ थन सैवस इद्र आद्रत नाय द्वा
क्षत्रत्वा न तस्य हायक ॥ वलि मयध ॥ ॥ ३ ॥ अनक वायुकि
तद्रक कक्षी टक यद्र महायद्र शिवपानं कूत्रिक वनून या
वदवति महादवति सामशिभिदधुधन महादधुधन अयः

अ
न
म
य
क
॥
३
॥

॥
३
॥

तात्र कूलश्चनशायनच सायन महासागव अनयतक महा
तक श्रीकान्ति महाकान्ति सलूय महासलूय यदाहिदः
अमकस्य कष यादस्य प निमित्तार्थ आनाम महादवः
सिनिश्महासिनिश्चागच्छा गच्छ महानागप्रियतया शु शुव
दानपतः अमस्य कष यादस्य प निमित्तार्थ आयुशात्रा

म० उ० म० य० व० य० वा० या० वि० पू० न० यं० श्री व० ज० ध० न० आ० डा० य० यं० न०
 रु० रु० द० ण० र्थ० पु० गि० द० स्त्रा० दा॥ ॥ म० ता० द० त्र० ॥ कमि० हा० त० पू० डा०
 या० अ० न० पो० त० डा० हा० य॥ ॥ न० डा० क० थ० द० न० क० गि० ज० य० त० म० दा०
 व० क० त० य० क० न० व० का० थ० अ० न० त० न० का० य० य० क० द० वा० क० द० न० क॥ य०
 ध्या० नि० पू० डा॥ यं० लां० र्थ० सु० ॥ म० ध्रु० व० थि० न० क० हा० न० त० न० क॥

म० ता० द० त्र० ॥ क० मा० प० न० ॥ द० श्रि० अ० य० डा० स० ल० ग० न० ता० न० आ० सि०
 ब० द० वि० स० र्ज० न० ॥ ॥ नू० ति० ना० ग० य० डा० स० मा० य० ॥ ॥ न० म०
 ए० न० म० ४ व० ज० स० हा० य० ॥ य० ना० लि० क० य० थ० य० न० ४ ॥ नो० लि॥
 आ० ग० म० स० ए० नि० वा० य० ६ ॥ म० ६ ॥ वृ० हि० त० य० वि० ज० ह० न०
 श्री० उ० या० अ० वि० हि० स्त्रा० वा० ॥ ॥ य० र्थ० ॥ वृ० हि० स्त्रा० न० वा० वि० ज०

ज० अ० य० व० य० थि०

॥ ॥ न० म० ४ व० ज० स० हा० य० ॥ य० ना० लि० क० य० थ० य० न० ४ ॥ नो० लि॥

निज॥ धाउ न॥ दन्ति॥ विहि मास॥ विज पृथ नाग॥ धाउ
सिज॥ यन्त्रिम॥ रहि च॥ विज कस ल॥ नद्र मनि क॥
उरु न॥ विहि यूवा॥ विज मत्र॥ धाउ अहा॥ अन्ना॥
विहि हान्न॥ विज कर्कत॥ धाउ मत्र॥ नेपथ्य॥ विहि
६० यूका॥ विज धंदु न॥ धाउ जिदि॥ वायू न॥ विहि हायू

हान्न॥ विज नाउत धाउ न॥ ६० मं॥ विहि का नत विज मृटि
धाउ कं॥ हनुति॥ यवा मृत॥ हिति॥ उषि इत सां॥ रनिवा
वेरु का यास्यं तयक॥ सस्ति वाक्कन॥ धून दाउ॥ यति कृया घ र न
ध्वं निज॥ सुसिया॥ नैव॥ हि नायाउ॥ नाग य म्बदल अरु नाग वा
यकं॥ हनु नथ॥ वन्दु विवृत याउ॥ मथ॥ यत्र स्वात्र न दूयक
जन गुरु विधान॥

तं जं महि स्वास्तु न हितं ॥ जम दधु कनक्षाय श्री हनक नमा
मिह ॥ २ ॥ ^{सं} ^३ ~~उद्धरुटिक~~ संका सं गुरु नाग भविय पुरु ^३ कनमनी
कनक्षाय वनू भाय नमामिह ॥ ३ ॥ ~~सूना~~ काय महातज्ज ज्ञात्र
कात्र समप्रती ^{कं} अश्व रूप युदा द्राय कूधनाय नमामिह ॥ ४ ॥
वाय भादेख तज्ज सूना प्रात धनवीन वासकम उ नक्षाय अजात

न नमामिह ॥ ५ ॥ ^{का} लाजावर्ण महायूं हाउरुत नरुषि तां स्वप्न
या मधनवीनं यगासन नमामिह ॥ ६ ॥ ~~पात~~ रुक सत्राही
सन्नादरु महावर्ण वीवन वयनं दव मगसन नमामिह ॥ ७ ॥
सूनापानि गिभं गं व उद्धवर्ण महा कून सदा कल्यान तिरुव
गियूना कन नमामिह ॥ ८ ॥ उद्धवर्ण पितवर्ण वयवर्ण घा

र्गं चरम कम पुनू कस्तु ग. हं भा नू रन मा मि हं ॥ २ ॥ नाय वा
 जमु यव न कृता जस्तिक न धृतां यम पु नि स हि सै व. सय ना ग
 न मा मि हं ॥ १० ॥ यि थि वि. कु म ध न वै व. अ म ग क लु सै य कू।
 सर्वा ङ्ग क ल क व लु. य म्मा स न. न मा मि हं ॥ ११ ॥ त त म् क
 न थ य न ॥ क य नो स. सै य नै य ग य ॥ ॥ अ न क वा उ दि त
 क का मि ३२ त न

क क. क कौ ट क. य म्म म हा य म्म. म स यान. क ली क. व नू ल यान द
 ती म हा द व ति. सा म सि नि. म हा सि नि. दं लु ध न. म हा द लु ध न ३
 अ य नान. दू नू र न द्या य न द. सा ग न. म हा सा ग न. अ न व ग य न
 यी का कि म हा को कि. सू न य म हा सू न य. त डा ली क. स हा द न सि
 नि २ म हा सि नि रु म हा धि य त य. य म्म नी. क य. आ ग त्व या ना

धे. सुसिखाहा ॥ **गता** **आय** **ध्यान** ॥ ॥ गता **आय** **म** **धुन** **म** ॥
 ध. वे. का. ने. न. य. म. मा. न. व. ग. द. य. नि. य. का. न. वि. ज. व. न. न. य. ॥
 उ. क. म. उ. द्वि. त. उ. उ. क. व. र्ण. स. क. रु. ध. र्ण. क. र. वा. म. र्ण. स. ध. ना ॥ **पूर्व** **द**
 न. ध. न. क. ना. ग. ना. जा. नि. न. व. ध. र्ण. वि. रु. ध. ॥ **द** **क्षि** **न** **द** **न** ॥ म. म. ना. ग. ना.
 जा. उ. क. व. र्ण. य. ध. र्ण. ॥ **य** **ध्वि** **स** **द** **न** ॥ त. क. क. ना. ग. ना. जा. य. क. व. र्ण. न. व.

रु. ध. ॥ **रु** **न** **द** **न** ॥ वा. उ. कि. ना. ग. ना. जा. ध. म. व. ध. र्ण. स. क. रु. ध. ॥ **य** **य** **द** **न**
 ॥ स. ख. पा. न. ना. ग. ना. जा. य. क. व. र्ण. स. क. रु. ध. ॥ **ने** **अ** **य** ॥ क. क. ण. ट. क. ना. ग.
 ना. जा. ध. व. न. व. र्ण. स. क. रु. ध. ॥ **वा** **य** **य** ॥ क. ॥ वी. क. ना. ग. ना. जा. क. क.
 म. व. ध. र्ण. स. क. रु. ध. ॥ **रु** **ध** **न** **द** **न** ॥ म. हा. य. ध. ना. ग. ना. जा. य. ध. त. व.
 र्ण. स. क. रु. ध. ॥ **स** **स** **म** **जा** **वि** **हा** **व** ॥ स. र. रु. स. मा. प. ना. स. म. र्ण.

कृत्वा संप्रसन्नं च हृदी लोला वनं धनं प्रकृतं महावि
पतय ॐ हं जन्मदिव्यं यनारी तायं गगनं २ हं वल ॥ **यं ताः**
यं सुधा निराजं नु ॥ ॥ गङ्गा नाराजं ३ तकिनाजं मडा ॥ ३ वः
नृणां यय स्वाहा ॥ ३ अन्नकायं स्वाहा ॥ ३ वायुकिं वः ॥ ३

तुङ्गकायं नः ॥ ३ युष्मयं नः ॥ ३ मदा पुष्पाय नः
॥ ३ सख्युनाय नः ॥ ३ कक्षाटकाय नः ॥ ३
कालीकाय नः ॥ **यं तां यं सु** ॥ वनूला दया नागना
जं स्वस्वदेववस्त्रिता सत्वास्त्यय सदानिर्ह्यं वनूला नमः
॥ सर्वतथागतकायविश्वधन स्वाहा ॥ सर्वं स्वतः स्वाहा ॥ ३

LS #

150 16 11
2025

230 - 100

1



२ ना५

वज्रदर्शनं ॥ **असकनकन** ॥ इदं ध्वन ॥ उं ख (मु) ना हं
 ॥ **ममांजनसिमाविय** ॥ उं वनं धियत य सर्व विष्णु रुत २ ॥
 लसिमा वीहि ध्वन ॥ उं ख (मु) ना हं स्वाहा ॥ उं वनं
 मुकुनं कानैल वं रुत यमानं मुकुवजं विराया ॥
यमी नदय ॥ उं वज्र वरुताय स्वाहा ॥ उं वा धि वक्राय स्वाहा ॥ उं व
 वनेति ॥ १ उं वलं गतमि

१ इवलु २ अवति पिल्लासि ३ वडसि
 जयं ह्याय स्वाहा ॥ उं वज्र नकाय स्वाहा ॥ उं वज्र कूर्वाय स्वा
 हा ॥ उं वज्र सरुमुका नाय स्वाहा ॥ उं अयति रुताय स्वाहा ॥
 वजायुक्ता स्वाहा ॥ ॥ सर्वपाय दहन वजाय सर्वपाय स्वाहा नाय
 उं वज्र पृथ्वी स्वाहा ॥ वज्र वंगाय स्वाहा ॥ उं वज्र विष्णुय स्वाहा ॥
 उं सर्वार्थे सि विरय स्वाहा ॥ उं वज्र दं न रुताय स्वाहा ॥ उं व

२ अरुग १ यीका २ गच्छा १ कालसि २ स्वां डम

१ गाय

१ सिद्ध

धनं नृणां प्रसादात्

जनास्त्यस्वाहा ॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥** मन्मथसुखं सदा ॥
वीरिदय ॥ **जनास्त्यस्वाहा ॥** धनं नृणां प्रसादात् ॥ धनं नृणां
सुखं नृणां ॥ **जाय ॥** उवजव नृणां य ॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥**
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०८ ॥ तथा मन्मथसुखं ॥ **धनं नृणां प्रसादात् ॥**
धनं निवास्त्य ॥ मात्रकं नृणां ॥ यत्नं नृणां सुखं ॥ जनास्त्य

नमो भगवते वासुदेवाय

२ आदितिविषय

पतिनां गताया स्वस्वदवस्थि ॥ मन्मथसुखं सदा ॥ वनं नृणां
वनं नृणां सुखं ॥ **॥ तथा मन्मथसुखं ॥** वीरिदय ॥ **धनं नृणां प्रसादात् ॥**
य ॥ आदितिविषय ॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥** धनं नृणां सुखं ॥
नृणां सुखं ॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥** धनं नृणां सुखं ॥
नृणां सुखं ॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥** धनं नृणां सुखं ॥

नमो भगवते वासुदेवाय

मिसिंहनतायिना॥ तथामात्रवर्तुजाहो सर्वसत्त्वार्थकान्ध
त॥ तसमस्यं न वं लै संकात्रजं वायुमिजन पृथिविस
मेन भसपेनिहं कात्रज तदुभसमस्य वजसयि मुमि व
जपाकान वजयजत्र वितातविरावा॥ विश्ववज वदिका
शैकं जवक यविनामन यभनि सुवनविरावा॥ ० ॥

पेनां श्रीमु॥ निलाकरन॥ अर्धयाय॥ यं लोर्धमु॥ वनिवि
य॥ थन धाहाडायाउ दमक्रिया याय विधिथं प्रतिष्ठा
याय॥ थनदवता दूतियाय॥ थननि विदिगवनिविय॥
आइमि॥ तभाजनाग्निमुखन येकात्रन जवरुनपसा
न सुकवज विहावा॥ उअएनय स्वाहा॥ दृग॥ उअयति द

तव जाय स्वाहा ॥ कुम्भ ॥ ॐ वृजा यश्व स्वाहा ॥ सप्त ॥ ॐ वाविः
विजाय स्वाहा ॥ ॐ नगा ॥ ॐ सर्वपाप दहन तव जाय सर्वपाप
दहन स्वाहा ॥ शयन स्वाहा ॥ ॐ वनपुष्प स्वाहा ॥ ॐ ह्यादि कथन वि
हिदका दूय ॥ ॐ सर्वसंपद कारिणि ॥ ॐ अमृतमय नमः ॥ ॥
पञ्चमस्तु ॥ अङ्गा इह सप्त ॥ धृति ता सर्वसतया अङ्गा इह

तिविय ॥ ॥ धनवि महावनिविय ॥ ॥ धिजात्रा ॥ चंला
र्ष ॥ ॐ युगि वनि स्वा न ता नै पक्ष याय ॥ ॐ स्व स ॥ इह
तया अ सुवक्ष च न तया अ ॥ ॥ क्रमायन ॥ मधुन विस
र्जन संगम न तय ॥ युगपजा दक्षिण क्रमा निखक आ
सिवात सया इति ॥ ॐ सन मधुवपान सिधु मूदन जी

८ नागं पतत्वा यथा त मरुत्वा । उं कुवत् कुं उ मिलि स्यात् ॥ शुक्तिम
 लक्ष्मी यज्ञली यज्ञ वडा ह्याय नागघ्न विगुं सतय ॥ ॥ थः
 नानि कूमात्री यज्ञा ॥ ॥ समया कर्त्तव्ये ॥ ॥ जलदा न वायु ॥ ॥
 ॥ मज्जवृषं तासं वृ मृत्तमयं व सदा नृजय विष्णु वा विष्णो नृ दे
 वं वृष मृत्तमयं ॥ आदो ग्वमति रपा नी कुमिजी ग्व प्रजा यच्च ॥
 प्रियु ती त्रया सर्वमम दत्तं जन्म मृत्तं पानिय पवन वायुष

शुक्तिम
 लक्ष्मी
 नागघ्न
 विगुं

पावरा स्य नयं मृत्तमयं ॥ मया दानं न तति विष्णु वृष मृत्तमयं
 स्ति ॥ ० ॥ वृत्ति जलदा म दामन त्रि वि सना फध ० ॥

॥ ॐ नमो नत्तुयाय नमः ॥ वलुवज्जपानयमहाज्जसनाप्र
त्य वन्धरसुपकात्रपि स्वाहा ॥ ॥ वीवनुकशि
कसफज्जफेनयुल्लिवन्धकाय्यः ॥ नत्तुपूर्वमवधम्मरा
नकेनरुतनकाविधन ॥

ॐ नमः श्रीवज्रसूत्रायः ॥ ॐ श्री ४ ह्रीं श्रीमद् वज्रसूत्राय नमः
 गत्यादिः ॥ ॐ समन्ताह्वयकुमां वृद्धा अस्मादिषु सन्नितां ३ नमो वेनाः
 वनाह्वयानवन्मनागनाजा जवद्वननत्वा सर्वताग समधिपः
 सफाह्वयह्वयरासः ४ यवनाय मनूयकम सर्वसत्त्वजनज निधम्मा
 यवन्मसका २ ह्रीं ॥ ॐ गुरावगुद्धा सर्वधर्मास्त्रादि ॥ गुरावगुद्धा

वतात्मका ह्रीं ॥ दक्षिणह्वयकुमां वृद्धादि ॥ ॐ वज्रपद्मह्वय ह्रीं ॥ ॐ
 वृं श्रीं जिं र्वं ह्रीं ॥ ॐ नो मां प्रो तां श्रीं श्रीं तामाह्वयकनक २ मतिव ह्रीं ह्वय
 हो ॥ ॐ ह्रीं सिद्ध ॥ हो उष्ट्रिष ॥ हो क ह्रीं ॥ ह्रीं व ह्रीं ॥ ह्रीं नासिका
 ॥ हो वज्र ॥ हो क ४ ॥ ह्रीं ह्वय ॥ ह्रीं उष्ट्र ॥ ह्रीं पाद ॥ ह्रीं सिद्धा ॥
 श्रीगत्यास ॥ ॐ श्री ४ ह्रीं ॥ त्रिकाया अष्टिस्थान ॥ ॐ व ह्रीं हा ॥ वज्र ॥

शीव नूय नाग नाजा सप विवा ना इष्ट ॥ आकर्ष ॥ उँ वजा कृ न ४ जल्यदि
॥ उँ पीव ज व नूय य व न सुखा नाय अर्ध आचमनं पति च्छुत्वा हा ॥ ज हुँ व
हुँ ॥ ॥ पूष्य ग्राम ॥ उँ आ ४ वे ना च निरुव वज व नूय य व ज पूष्य प
ति च्छुत्वा हा ॥ उँ वं विजा रुवा य व नूय नाग नाजा य व ज पूष्य पति च्छुत्वा
हा ॥ उँ आ ४ वज व नूय नाजा य ५ ॥ दधूस ॥ उँ वायु कि नाग नाजा य ५

हुँ २
॥ हुँ अन ॥ उँ न क का य ५ ॥ ख अस ॥ उँ क का ट का य ५ ॥ अ अन ॥ उँ प
नाय ५ ॥ ज अस ॥ उँ हुँ नू २ नाग नाजा य ५ ॥ ख व का न ॥ उँ मं महा प नाय
५ ॥ ख उ अ थ धू का ॥ उँ कू कू नि का य ५ ॥ ज उ अ थ धू का ॥ उँ मं मं त्र पा नाय ५
॥ ज उ अ का थू का न ॥ ॥ त द्वा अ प म स द्वा ल प ति का ॥ म ध्व स ॥ पू र्व स ह
अ न ॥ उँ गं गं ग म ग जा य ५ ॥ उँ वं व द्र य हा नाग नाजा य ५ ॥ उँ वं व का

गवाजाय ॥ ॐ हं समुद्रनागवाजाय ॥ वा ॥ ॐ वं वधनामना
जाय ॥ ॐ ॥ ॐ ला घं सु ॥ वसिष्ठनामवलगुनतत्रपं वलपराज
नपूष्य जवाय नमः सुदागकनपूष्यजीधूष्य सुमावहिरिष्टिः
तः ॥ इति नववृक्षं नमामि ॥ ॐ नमः सुदं नमामि सुदं नमः नमः
सुदं ॥ सर्ववृक्ष पूजापस्तुना स्मार्तं निर्यामि ॥ सर्वसत्त्वपत्रिण

सं आत्मानं निर्यामि ॥ सं सात्रततिह माहमयस्य पापं जसर्वः
मदतनूयस्यमनास्ति तद्वमयामि तिरितीकान्ध्र निवमनस्य पून
ताजिनानी सुववृक्षवृक्षसु तं वृक्षकनपशकं वरं भुजडिर्मगलः
कालिपूष्य ॥ तं सर्वसाव जमाघसु दातदधी वृक्षा माहाजस
निधयत्रिभमयामि ॥ आश्वतथमवेन सनयं यमामि ॥ पधपूह

स्वनि कर्न कनू आ उ चि हं धर्म विभु द्विष्टु वृषा न नृदं सुमयं संघ जिः
यम जग जन गु नि न म हतं ॥ निर्यात या मि नि रि नि ज दा ह त न व
क्षय सा र्ग ग ना य कृत्वा म कार्य । सु ध मि ना शि म त व द्रु नि जा ज ना थ
य न ॥ त्वं क रू सु म ह म व प लि य हा य ॥ अ ह व ना मू क म च ना ल र य
वा धि जं ग उ र्ध शि धि या म नू त न वा धि प दं भा हा र्थ दं स्वा मा ध य म

सु प गु अ या न का । त न र्वा धि स म ल पू न घू न म । त थ य का न य वा य
ध र्म धि जा क र्ता । त इ प त्रि लं का लं म ना मि नि क र्ता न क र्ता लं क र ॥ त
इ प लि वं का न न य व न म्भ त द्य म्भ लं क र्ता । त इ प त्रि लं का नं य पृ थि वि
व द्रु न अ पि रु का नं नि भू चि क व जालं क र्ता ॥ त इ प त्रि लं का नं य सु म्भ
नू व द्रु न ल म र्य क न म्भ अ सु ह म प म्भ शि त ॥ त इ प त्रि लं का लं नः

कृताग्रल चतुनश्चतुद्वान्चतुतालन रुषितं ॥ हा ला ध हा ल कि
 किमिजालं व कृ लिकुमसिषपथर्क ॥ गतमध्वयं का न य विना नृ तं प
 प्रमंश विराया कृणल क या जा क क मिका प लि स्य ल्य का प वि नृ तं ।
 वं का न वी ज व नू न वे नो च न प वि ना नृ तं व नू न ना ग बा जा स्व र व
 भूम नू ष्य स्य स फ रु ना दि तं शु रं स र्यं दि व न र व वाम क ल ना ग पा

षो व न ध न द्र व्या लिं गी तं ना र न ध र्वा लं काल वि वि स स्म र न सं श
 रितं ॥ ॥ गत पूर्व द न वा षु कि ना ग बा जा श्व र व र्क न व रु ष्य च
 दि त द क्षि न व ल द वाम द व्या लिं गी तं वा का न वि ज वि रा य ॥ ॥
 द क्षि ण द न त द क ना ग बा जा न क व र्क यं व रु ना च्छु दि तं रा का न वी
 ज द क्षि ण श्रु त य ह स्ता वाम द व्या लिं गी त प ण्च त् ॥ २ ॥ पश्चिम द

लं क काटक नाग नाजा ह निगवर्षुं सफरुता द्वादितं क का नवीज
दक्षिण ललितं वा मधु द्या लिता रावयत् ॥ ॥ उरु न द न प म ना ग
नाजा धूमवर्षुं शिरुषा द्वादितं य काने विजं दक्षिण कृत्य वा मधु
द्या लिनिता रावयत् ॥ ॥ विदिता ॥ ॥ अथ य द्दं द्दं द्दं नाग ना
जाय कृष्णवर्षुं दमेरुषा द्वादितं क का नवीज दक्षिण कृवलधः

वा वा मधु द्या लिं गी त रावयत् ॥ ॥ नेमरा महा प म ना ग नाजाः
शीत न कृवर्षुं पीपी द म रु णं द्वादितं दक्षिण कृष्णधनं वा मधु द्या
न कृतं म काल विज रावयत् ॥ ॥ वायू य द ल्य कृ वि क ना ग नाजा
विश्ववर्षुं शिला द या द म रु णं द्वादितं दक्षिण न ल कृ न धनं वा मधु द्या
लिं गी त कृ कान विज वि रावयत् ॥ ॥ अथ य द ल गी त यानः

नागनाजा पीतवर्धुनवरुताद्यादिर्गं मकारवीजविश्ववर्धन॥ ॥
मध्या॥ ॥यद्यस॥ आ॥ पा॥ निर्वाजन॥ ॥पूर्वयन्मयतिकासे॥ स्वा
नधीय॥ ॥ॐ॥ उ॥ व॥ व॥ नागनाजा॥ सु॥ प॥ ति॥ ग॥ जन॥ नागनाजा॥ कु॥ ष्ठ॥ व॥ र्धु
य॥ स्त्रा॥ हा॥ ॥ मध्या॥ ॥ॐ॥ उ॥ व॥ द॥ प्र॥ र॥ नागनाजा॥ सु॥ क॥ व॥ र्धु॥ य॥ ॥ दक्षि॥ ॥
ॐ॥ सु॥ र्धु॥ य॥ र॥ नागनाजा॥ न॥ क॥ व॥ र्धु॥ य॥ ॥ वाम॥ ॥ॐ॥ म॥ त॥ वा॥ हू॥ नागना

जा॥ आ॥ म॥ व॥ र्धु॥ य॥ ॥ वाम॥ ॥ दक्षि॥ न॥ दि॥ ग॥ य॥ ति॥ का॥ ॥ॐ॥ म॥ं॥ वि॥
जा॥ ना॥ ग॥ ना॥ जा॥ पि॥ त॥ व॥ र्धु॥ य॥ ॥ मध्या॥ ॥ॐ॥ म॥ पि॥ प्र॥ र॥ नागनाजा॥ कु॥
ष्ठ॥ व॥ र्धु॥ ॥ दक्षि॥ न॥ ॥ॐ॥ उ॥ व॥ द॥ नागनाजा॥ सु॥ र॥ व॥ र्धु॥ य॥ ॥ दक्षि॥
॥ॐ॥ उ॥ व॥ र्धु॥ नागनाजा॥ न॥ क॥ व॥ र्धु॥ य॥ ॥ वाम॥ ॥ॐ॥ हा॥ ट॥ न॥ ना॥
गनाजा॥ ह्या॥ म॥ व॥ र्धु॥ य॥ ॥ वाम॥ ॥ प॥ वि॥ न॥ द्वा॥ न॥ ॥ॐ॥ म॥ं॥

नागनागावकवर्धुयः॥ मध्यः॥ ॥ॐ॑ सिंधूनागनागा कर्षुवर्धुयः
॥ दक्षिणः॥ ॥ॐ॑ अश्वनागनागा खतवर्धुयः॥ दक्षिणः॥ ॥ॐ॑
वक्रानागनागा पीतवर्धुयः॥ वामः॥ ॥ॐ॑ भीमानागनागा म्भसव
र्धुयः॥ वामः॥ ॥ॐ॑ उरुवहावयलिका॥ ॥ॐ॑ मूलिवनागनागा
म्भसवर्धुयः॥ मध्यः॥ ॥ॐ॑ अनननागनागा कर्षुवर्धुयः॥ दक्षिणः॥

॥ ॥ॐ॑ अनवतफनागनागा खतवर्धुयः॥ दक्षिणः॥ ॥ॐ॑ मतसि
कनागनागा पीतवर्धुयः॥ वामः॥ ॥ॐ॑ मतवाकनागनागा न
कवर्धुयः॥ वामः॥ ॥ विदिगयनिकाकूनसः॥ ॥ॐ॑ अनवनाग
नागा खतवर्धुयः॥ मूलः॥ ॥ॐ॑ नदननागनागा पीतवकाय
॥ नैमल्यः॥ ॥ॐ॑ समुद्रनागनागा वक्रम्भसायः॥ वायुः॥ ॥

ॐ वद्वतनागनाजा अमरवर्ष ॥ ॐ नमः ॥ ॥ नमः ॥ ॥ नमः ॥
जनाधिपतिनागनाजा स्वस्वदेवमवतिष्ठत सत्वाद्ययसजानित्यः
वद्वमदिनमाहुत ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
लिखितमिदं पञ्चतथागत दिग्वर्ष स्वस्वमस्तु नमः
निरावति ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

वज्रि ॥ ॐ धर्मवज्रि ॥ ॐ धर्मवज्रि ॥ ॐ धर्मवज्रि ॥ ॐ धर्मवज्रि ॥
वज्रालिनीपञ्चत ॥ ॥ नमः ॥ ॥ नमः ॥ ॥ नमः ॥ ॥ नमः ॥
स्यादि ॥ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

हैं मित्र ॥ हों उल्लिख ॥ उअ कागधवाव य वापु कि ॥ हों क ॥ व दान
य पूरुव नि गदा गजलनालिका मूपन दोयन न कयाव ॥ हों व क
दया ॥ श्री गनिमानि सग संपयाल ॥ हों नाहा ॥ गमन व अ द दौ क
को टक ॥ हों मूख ॥ द्विपन द्विलत पद स गाम व स ग क क ॥ उं कः
क नाद्या पूष्य त सवन स्य म नाद ग क नी र ॥ हों द दय ॥ य म नाः

ग लंका व वाजल ॥ हों नाही ॥ माहाय म म ला ज ख ना ॥ हों उ अ
॥ क ख द क वाध क नि क ॥ हों पाद ॥ क हा ग वा नू ना ग ॥ हों निखा
॥ मू मू प ख यु व न्य म म ना म म म त गो लि व हो हा मा न्य ना म हा
य त ॥ जाय ॥ ॥ उं व नू अ य हूं वं हूं खा हा ॥ ॥ ग ना व लि द याः
त ॥ उं मू ४ व म नं प ति च्छा हा ॥ उं व ज व नू अ य ख र खा हि २ः

तिष्ठ २ वध २ मूक स्य ममि पूरि कनू २ पीछं आग वु २ वषा
पम २ हू २ रुट २ खाहा ॥ ३ आ ४ हू ४ जय विजय नदा पनंद पम
ककोटिक वापु कि मंखपा न कनिक २ नक गकक महापम स्य सप
निवान स्य ४ ०० द वलि गंध पूष्य धूप दिप मकन द दान्य हू गचा गु
स ४ सप निवाना ४ पीछं ०० म वलि ग २ खा द रु पी व रु ज ४ हू व

हा ४ सह फानु सर्व सत्वाना २ ममि पूरि कनू हू २ रुट वज धन म
हूपय निवृत्ता हा ॥ ॥ प ला यं दु म ॥ ०० ति नाग स माधि
समाफ म ॥ ००००० ॥